Paper : Sanskrit Linguistics (DSE-5), Faculty : Dr. Meghraj Meena

Class : B.A. (Hons.) 6th Semester Dept. of Sanskrit, Shivaji College, Uni. of Delhi

Topic: *Sanskrit and Indo-European Language Family (संस्कृत एवं भारोपीय* भाषा-परिवार*)*

(E-resource for class teaching, dated 19/03/2020)

अधिकांश भाषाएँ भाषा परिवारों से सम्बन्ध रखती हैं। एक भाषा परिवार संबंधित भाषाओं का एक समूह है जिसे एक सामान्य ऐतिहासिक पूर्वज से विकसित किया जाता है, जिसे **प्रोटो-लैंग्वेज** (ग्रीक में प्रोटो का अर्थ है 'प्रारंभिक') के रूप में जाना जाता है । संस्कृत भारतीय उपमहाद्वीप की कई भाषाओं, जैसे कि बंगाली, हिंदी, मराठी और उर्दू की प्रोटो-लैंग्वेज (प्रमुख भाषा) थी ।[1]

विश्व के भाषा परिवारों के संबंध में कई मत हैं। जर्मन विद्वान *विल्हेम फोन हम्बोल्ड्ट* ने 13 परिवारों की चर्चा की है, जबकि पार्टिरिज ने 10 की और आधुनिक विद्वान् राड्स इनकी संख्या मात्र 12 ही बताते हैं जबकि भारतीय विद्वान 10 से 18 तक की संख्याओं का उल्लेख करते हैं ।

इनमें से 4 भाषा परिवारों से सम्बद्ध भाषाएं केवल भारत में ही बोली जाती हैं:

- **भारोपीय भाषा परिवार की आर्य भाषा**
- **द्रविड भाषा परिवार**
- **आस्ट्रिक भाषा परिवार की मुंडा भाषा**
- **तिब्बत-चीनी भाषा परिवार की तिब्बत-बर्मी भाषा**

भाषा परिवारों का मुख्यतः 2 आधार पर वर्गीकरण प्राप्त होता है :

भाषा की प्रकृति की समानता-असमानता को वर्गीकरण का आधार बनाया गया । भाषाओं में मिलने वाली समानताएँ मुख्यत: दो प्रकार की होती हैं । पहली समानता बाहय- संरचनात्मक होती है एंव दूसरी आंतरिक अथवा प्रकृति -प्रधान ।

[1] https://www.mustgo.com/worldlanguages/language-families/ (accessed on 16/03/2020)

1) **आकृतिमूलक वर्गीकरण :**

शब्दों की आकृति अर्थात् शब्दों और वाक्यों की रचनाशैली (अर्थात् भाषा की बाह्य शैली) की समानता के आधार पर।

2) **ऐतिहासिक या परिवारमूलक वर्गीकरण (अर्थतत्त्व सम्बन्धी) :**

अर्थतत्त्व की समानता, भाषाओं के परिवार, वंश-वृक्ष व उनके आंतरिक-संरचना के आधार पर विभिन्न समूहों में वर्गीकरण।

भाषाओं के परस्पर संबंधों के बजाय उनके प्रकारों द्वारा उनका वर्गीकरण करने का प्रयास ऐतिहासिक भाषा विज्ञान की शुरुआत के आधार बने । 1818 में भाषा-वैज्ञानिक ***अगस्त वॉन श्लेगल*** ने एक आकृतिमूलक (टाइपोलॉजिकल) वर्गीकरण प्रस्तावित किया जिसका व्यापक रूप से अनुकरण किया गया और 19 वीं शताब्दी से अब तक लोकप्रिय रहा है।

विश्व में भाषा परिवारों के निर्धारण हेतु भाषाओं की भौगोलिक स्थिति, स्थानीय समीपता, मूल शब्दावली में समानता, अर्थगत, व्याकरणगत तथा ध्वन्यात्मक समानता को भी आधार बनाया जाता है।

❖ भाषा-परिवार :

विश्व की भाषाओं को चार भाषा-खण्डों में बाँटा जा सकता है :-

1) **यूरेशियाखण्ड- :- (यूरोप एवं एशिया)**

इनमें नौ मुख्य भाषा परिवार हैं –

- भारोपीय परिवार
- द्रविड़
- बुरूशस्की
- यूराल-अल्टाइक
- काकेशियन
- चीनी
- जापानी-कोरियाई
- हाइपर-बोरी अत्युतरी
- बास्क

- हेमैटिक-सेमैटिक

2) अफ्रीका-खण्ड :-

इसमें चार प्रमुख भाषा-परिवार हैं –

- बुशमैन
- बाँटू
- सूडानी
- होतेन्तोत

3) प्रशान्त महासागरीय-खण्ड :-

इसके प्रमुख भाषा-परिवार हैं –

- मलय-पॉलिनेशियन
- पापुई
- आस्ट्रेलियाई
- दक्षिण पूर्व एशियाई

इसके अन्तर्गत मुख्यत: मलय-पॉलिनेशियन परिवार है, जिसे कुछ विद्वान अनेक :परिवारों का समूह मानते हैं।

4) अमेरिका खण्ड :-

अमेरिकन परिवार की भाषाओं में लगभग सौ भाषाओं को स्वीकार किया गया है।

❖ भारोपीय भाषा परिवार :

भारोपीय भाषा परिवार यूरोशिया खण्ड का सबसे प्रमुख परिवार है। इस परिवार में मुख्यत: भारत और यूरोप की भाषाएँ सम्मिलित हैं अत: इसका अंग्रेजी में Indo – European नाम दिया गया जिसका हिन्दी अनुवाद ही भारोपीय है। 1813 में, ***थॉमस यंग*** ने पहली बार इंडो-यूरोपियन शब्द का प्रयोग किया। लगभग सभी विद्वान् इस बात से सहमत हैं कि कोई प्राचीन भाषा थी जिससे संस्कृत, ग्रीक, लैटिन और उनसे विकसित हुई भारतीय और यूरोपीय भाषाएँ सम्बन्धित हैं।

डॉ. मंगलदेव शास्त्राी के अनुसार - **"** भारत-यूरोपीय (भारोपीय) भाषा-परिवार से आशय उन समस्त भाषाओं से है, जो उस प्राचीन भारत-यूरोपीय मूलभाषा से निकलती हैं। 'भारत-यूरोपीय' शब्द के प्रयोग से यही अभिप्राय है कि इस भाषा-परिवार के, भारत से लेकर यूरोप तक के भौगोलिक विस्तार की ओर ध्यान दिलाया जा सके। **"**

❖ भारोपीय भाषा का क्षेत्र :

भारोपीय भाषा के मूल क्षेत्र के विषय में विद्वानों में मतभेद है। इस सम्बन्ध में प्रमुख मत हैं :-

- भारोपीय भाषा का मूल क्षेत्र भारत था।
- मूल क्षेत्र भारत के बाहर एशिया में कहीं था।
- मूल क्षेत्र यूरोप में कहीं था।
- मूल क्षेत्र एशिया और यूरोप के संधिस्थल पर कहीं था।

भारत को मूलक्षेत्र मानने वाले विद्वानों का प्रमुख तर्क यह है कि भारत के प्राचीनतम साहित्य ऋग्वेद आदि में आर्यों का कहीं बाहर से आने का उल्लेख नहीं है। यदि आर्य भारत से बाहर किसी प्रदेश से आये होते हो ऋग्वेद में वहाँ के स्थान, नदी, पर्वत आदि का नाम अवश्य मिलता परन्तु ऋग्वेद में भारतीय नदियों और पर्वतों का उल्लेख है। ऋग्वेद भारोपीय भाषा का प्राचीनतम प्रतिनिधि ग्रन्थ है। भाषावैज्ञानिक तथ्यों से यह सिद्ध है कि भारोपीय भाषा, ऋग्वेद की भाषा के ही निकट रही होगी। ऋग्वेद और भारोपीय भाषा में काल की दृष्टि से अधिक अन्तर नहीं रहा होगा। इसलिए ऋग्वेद की भाषा बोलने वाले यदि कहीं बाहर के होते तो वहाँ के क्षेत्र का वर्णन अवश्य मिलता। परन्तु ऐसा कुछ भी उल्लेख नहीं मिलता। इसलिए आर्यों का मूल निवासभारत ही था।

भारोपीय परिवार की मुख्य विशेषताएँ :

I. साहित्य की दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध व प्राचीन भाषा परिवार।
II. अपने मूल रूप की दृष्टि से यह परिवार श्लिष्ट-योगात्मक (Ctrl+Click to open the link) कहा जा सकता है।
III. इसमें योग (प्रत्यय का प्रकृति से या सम्बन्धत्व का अर्थतत्व से) प्राय: सेमेटिक या हैमिटिक परिवार-सा अन्तर्मुखी न होकर बहिर्मुखी होता है।
IV. जो प्रत्यय जोड़े जाते हैं, उनके स्वतंत्र अर्थ का पता नहीं है। अनुमान ऐसा है कि अन्य भाषाओं के प्रत्ययों की भाँति भारोपीय प्रत्यय भी सभी स्वतंत्र शब्द थे, उनका अर्थ था। कालान्तर में धीरे-धीरे ध्वनि-परिवर्तन के चक्र में जोड़ने से उनका आधुनिक रूप मात्रा शेष रह गया।
V. इस परिवार की भाषाएँ आरम्भ में योगात्मक थीं, पर धीरे-धीरे दो-एक को छोड़ कर सभी वियोगात्मक हो गई, जिसके फलस्वरूप, परसर्ग तथा सहायक क्रिया आदि की आवश्यकता पड़ती है। साथ ही कुछ भाषाएँ स्थान-प्रधान (Positional) हो गई हैं। जैसे 'राम मोहन को कहता है' में 'राम' के स्थान पर और 'मोहन' को 'राम' के स्थान पर कर देने से अर्थ परिवर्तित हो जायेगा पर संस्कृत आदि प्राचीन भाषाओं में यह बात नहीं थी।
VI. धातुएँ अधिकतर एकाक्षर होती हैं। इनमें प्रत्यय जोड़कर पद या शब्द बनते हैं।

VII. प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं। जो प्रत्यय धातु में जोड़े जाते हैं उन्हें कृत (Primary) कहते हैं और जो कृत लगाने के बाद जोड़े जाते हैं उन्हें तद्धित (Secondary) । तद्धित के भी तीन भेद हैं जो क्रम से शब्द, कारक के उपयुक्त पद कालानुसार क्रिया बनाते हैं ।

VIII. इस परिवार में पूर्वसर्ग या पूर्व विभक्तियाँ सम्बन्ध-सूचना देने के लिए पद बनाने के लिए बान्टू आदि कुलों की भाँति नहीं प्रयुक्त होतीं । उनका प्रयोग होता है और पर्याप्त मात्रा में होता है पर उनसे शब्दों या धातुओं के अर्थ को परिवर्तित करने का काम लिया जाता है। जैसे विहार, आहार, परिहार आदि में 'वि', 'आ', 'और' 'परि' आदि लगाकर किया गया है ।

IX. इस परिवार की एक प्रधान विशेषता यह भी है कि स्वर-परिवर्तन से सम्बन्धतत्व सम्बन्धी परिवर्तन हो जाता है । आरम्भ में स्वराघात के कारण ऐसा हुआ होगा । स्वराघात के कारण स्वर-परिवर्तन हो गया और जब धीरे-धीरे प्रत्ययों का लोप हो गया तो वे स्वर-परिवर्तन ही सम्बन्ध-परिवर्तन को भी स्पष्ट करने लगे । अंग्रेजी की कुछ क्रियाओं में यह बात स्पष्टत: देखी जा सकती है- drink, drank, drunk । यहाँ आई (i) का , ए (a) और यू (u) में परिवर्तन हुआ है, और इसी से उमसें काल सम्बन्धी परिवर्तन आ गया है ।

X. भाषा सम्बन्धी अध्ययन की दृष्टि से इस परिवार में सर्वाधिक व उल्लेखनीय कार्य हुआ है । 1886 में रायल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल में ***विलियम जोन्स*** ने पहली बार ग्रीक व लैटिन से संस्कृत के घनिष्ठ संबंध की घोषणा की और उसी समय उन्होंने इन तीनों के एक मूल भाषा से विकसित होने की अवधारणा प्रस्तुत की थी । इसी से तुलनात्मक भाषा विज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ ।

❖ भारोपीय परिवार का विभाजन :-

ध्वनियों के आधार पर भारोपीय परिवार को दो वर्गो में बांटा गया है :–

सतम् (*संस्कृत व अन्य भाषाएँ*) और **केन्तुम** (ग्रीक, इतालिक/ लैटिन, जर्मनिक, कैल्टिक, तोखारी, हित्ती, बाल्टिक, स्लाविक, अरमीनियन) ।

वान ब्रैडके ने इस परिवार के 'सतम्' और 'केन्तुम' दो वर्ग बनाये। इन दोनों शब्दों का अर्थ 100 है । यह नाम इसलिए रखे गये कि 'सौ' के लिए पाये जाने वाले शब्दों में यह भेद स्पष्ट है । 'सतम्' अवेस्ता का शब्द है और 'केंतुम' लैटिन का । स्पष्टता के लिए दोनों वर्ग की भाषाओं में 'सौ' के लिए पाये जाने वाले शब्दों को यहाँ देख लेना ठीक होगा-

सतम् वर्ग	**केन्तुम वर्ग**
अवेस्ता- सतम्	लैटिन – केन्तुम
फ़ारसी-सद	ग्रीक-हेक्टोन

संस्कृत-शतम् इटैलियन – केन्तो

हिन्दी-सौ फ्रेंच-केन्त

रूसी-स्तो ब्रीटन – कैन्ट

बल्गेरियन-सुतो गेलिक-क्युड

❖ भारोपीय भाषा परिवार का महत्त्व:-

1) विश्व में इस परिवार के भाषा-भाषियों की संख्या सर्वाधिक है साथ ही इसका भौगोलिक विस्तार भी सर्वाधिक।
2) विश्व में सभ्यता, संस्कृति, साहित्य तथा सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक विकास की दृष्टि से भी इस परिवार की प्रगति सर्वाधिक हुई है।
3) 'तुलनात्मक भाषाविज्ञान' की नींव का आधार भारोपीय परिवार ही है।
4) भाषाविज्ञान के अध्ययन के लिये यह परिवार प्रवेश-द्वार है।
5) विश्व में किसी भी परिवार की भाषाओं का अध्ययन इतना नहीं हुआ है, जितना कि इस परिवार की भाषाओं का हुआ है क्योंकि भाषाओं के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए इस परिवार में सभी सुविधाएँ हैं, यथा - (क) व्यापकता, (ख) स्पष्टता तथा (ग) निश्चयात्मकता।
6) **संस्कृत, ग्रीक, लैटिन** आदि इस परिवार की भाषाओं का प्रचुर साहित्य उपलब्ध है जो प्राचीन काल से आज तक इन भाषाओं के विकास का ऐतिहासिक साक्ष्य प्रस्तुत करता है और जिसके कारण इस परिवार के अध्ययन में निश्चयात्मकता रहती है।
7) अपने राजनीतिक प्रभाव की दृष्टि से भी यह परिवार महत्वपूर्ण है। जिसका कारण है, प्राचीनकाल में भारत ने तथा आधुनिक काल में यूरोप ने विश्व के अन्य अनेक भू-भागों पर आधिपत्य प्राप्त करके अपनी भाषाओं का प्रचार तथा विकास किया है।